



Vishal Kumar

14 Nov 1985

07:22 AM

Patna

Model: Gem-Report

Order No: 121708201

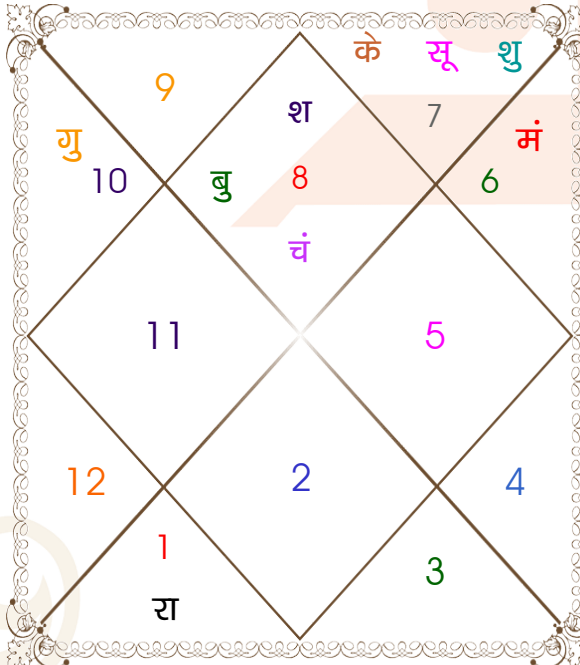
तिथि 14/11/1985 समय 07:22:00 वार गुरुवार स्थान Patna चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:23
अक्षांश 25:37:00 उत्तर रेखांश 85:12:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार 00:10:48 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 11:05:16 घं	गण _____: राक्षस
वेलान्तर _____: 00:15:36 घं	योनि _____: मृग
सूर्योदय _____: 06:06:08 घं	नाडी _____: आद्य
सूर्यास्त _____: 17:01:02 घं	वर्ण _____: विप्र
चैत्रादि संवत _____: 2042	वश्य _____: कीटक
शक संवत _____: 1907	वर्ग _____: सर्प
मास _____: कार्तिक	रैजा _____: अन्त्य
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: जल
तिथि _____: 2	जन्म नामाक्षर _____: नो-नौनिहाल
नक्षत्र _____: ज्येष्ठा	पाया(रा.-न.) _____: स्वर्ण-ताम्र
योग _____: अतिगण्ड	होरा _____: मंगल
करण _____: कौलव	चौघड़िया _____: शुभ

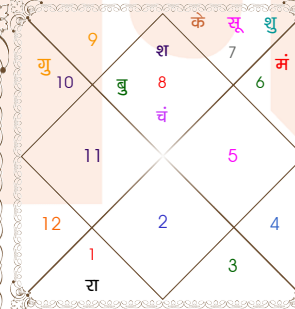
विंशोत्तरी	योगिनी
बुध 14वर्ष 0मा 27दि शुक्र	भद्रिका 4वर्ष 1मा 20दि उल्का
12/12/2006	04/01/2026
12/12/2026	05/01/2032
शुक्र 13/04/2010	उल्का 04/01/2027
सूर्य 13/04/2011	सिद्धा 05/03/2028
चन्द्र 12/12/2012	संकटा 05/07/2029
मंगल 11/02/2014	मंगला 04/09/2029
राहु 10/02/2017	पिंगला 04/01/2030
गुरु 12/10/2019	धान्या 06/07/2030
शनि 12/12/2022	भामरी 06/03/2031
बुध 12/10/2025	भद्रिका 05/01/2032
केतु 12/12/2026	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		13:34:30	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	---	0:00			
सूर्य		27:58:48	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	नीच राशि	1.21	आत्मा	पितृ	मित्र
चंद्र		18:57:34	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	नीच राशि	1.22	भातृ	मातृ	जन्म
मंगल		17:15:43	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.37	मातृ	भातृ	प्रत्यारि
बुध		19:54:04	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	शुक्र	सम राशि	1.50	अमात्य	ज्ञाति	जन्म
गुरु		16:12:34	मक	श्रवण	2	चंद्र	शनि	नीच राशि	0.92	पुत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र		11:54:48	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	0.97	ज्ञाति	कलत्र	वध
शनि	अ	05:59:11	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.23	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व	15:32:38	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि	---	---	ज्ञान	विपत
केतु	व	15:32:38	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	सम राशि	---	---	मोक्ष	वध

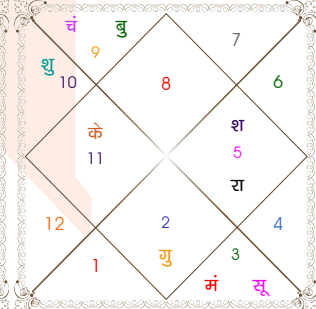
लग्न-चलित



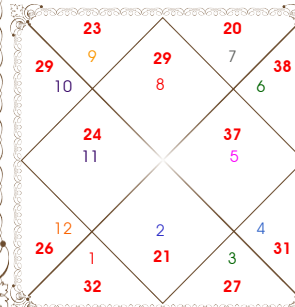
चन्द्र कुंडली



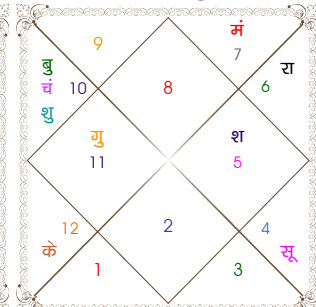
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली

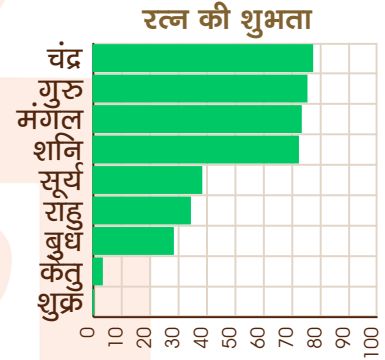


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	77%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	75%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	73%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	72%	स्वास्थ्य, पराक्रम, सुख
माणिक्य	सूर्य	38%	व्यय, व्यावसायिक हानि
गोमेद	राहु	34%	शत्रु व रोग, हानि
पन्ना	बुध	28%	रोग, दुर्घटना, हानि
लहसुनिया	केतु	3%	व्यय
हीरा	शुक्र	0%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	12/12/1999	50%	64%	73%	52%	75%	0%	72%	34%	3%
केतु	12/12/2006	12%	64%	80%	28%	75%	0%	59%	9%	28%
शुक्र	12/12/2026	12%	64%	73%	41%	75%	7%	78%	47%	16%
सूर्य	12/12/2032	56%	83%	80%	28%	81%	0%	59%	9%	0%
चंद्र	12/12/2042	50%	89%	73%	41%	75%	0%	72%	9%	0%
मंगल	12/12/2049	50%	83%	86%	3%	81%	0%	72%	9%	16%
राहु	12/12/2067	12%	64%	61%	28%	75%	0%	78%	55%	0%
गुरु	12/12/2083	50%	83%	80%	3%	88%	0%	72%	34%	3%
शनि	13/12/2102	12%	64%	61%	41%	75%	0%	84%	47%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा एवं नीलम रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य, गोमेद व पन्ना रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

लहसुनिया व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई हैं वो फिर से शुरू हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौँ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाईयों से स्नेह दिलायेगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतन्त्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती है। भाग्य और आय क्षेत्र में सफलता प्राप्ति होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भ्राताओं का सुख प्राप्त करायेगा। धन, सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज रत्न शुभदायक रत्न है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यों से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वाकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते हैं। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपत्ति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नजर दोष दे सकते हैं। आपको चश्मे का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन

आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। कुंडली के अन्य अशुभ योगों के प्रभाव के कारण सूर्य अपने शुभफल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको पिता, पद, प्रतिष्ठा और सामाजिक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में दिक्कतें दे सकता है। अपने पद प्रतिष्ठा को मजबूत करने पर आपका ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित हो सकता है। रत्न प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आपकी प्रवृत्ति कठोर शासक की हो सकती है। यह रत्न आपको अत्यधिक महत्वाकांक्षी बना सकता है। सरकारी पक्ष से सहयोग की कमी का अनुभव समय-समय पर होगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको अधिकार सत्ता देकर कुछ अहंकारी भी बना सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद आपको कुसंगति का शिकार कर सकता है। प्रतियोगिताओं में सफल होने के लिए आप कुमार्ग का प्रयोग कर सकते हैं। विपरीत धर्म के लोगों से आपकी मित्रता संबंध बढ़ सकते हैं। यह मित्रता आपको लाभ भी दे सकती है। रोग और आयु पक्ष के लिए गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल नहीं रहेगा। साहस की कमी आपको बड़े बड़े कामों को अंजाम देने से रोक सकती है। गोमेद रत्न प्रभाव से आपको रोग, ऋण और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करना होगा। ऊपरी बाधाओं या कोई रहस्यमयी बीमारियों के प्रभाव में आप आ सकते हैं। गोमेद रत्न धारण से आपको मामा, मौसी या चाचा पक्ष से सुख कम प्राप्त होगा।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने से आपकी बौद्धिक विषयों में रुचि कम हो सकती है। आपका स्वभाव अव्यवहारिक हो सकता है। सभा में अपने विचार रखने में आप संकोच का अनुभव कर सकते हैं। इस रत्न के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व और आयु दोनों प्रभावित हो सकती है। बुद्धि और व्यवसायिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको हो सकता है। पन्ना रत्न धारण करने से आपको स्नायु तंत्र और त्वचा से संबंधित रोग भी हो सकते

है। अपने जीवन साथी से आपके वाद-विवाद हो सकते हैं। जिसके कारण आपके दांपत्य जीवन की शांति भंग हो सकती है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते हैं। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आप अलौकिक विद्याओं की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए आप जीवन के दायित्वों से पीछे हट सकते हैं। आपकी सोच में नकारात्मकता का भाव प्रभावी हो सकता है। यह रत्न आपको आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। संतान सुख और धन दोनों पक्ष के लिए रत्न की प्रतिकूलता हो सकती है। यह रत्न विदेश स्थानों में मिलने वाली आपकी सफलता को सीमित कर सकता है। आपके रोग बढ़ सकते हैं। ऋणों का भुगतान आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। इसके अतिरिक्त रत्न प्रभाव से आपके शत्रुओं में बढ़ोतरी हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपके साहस में कमी करेगा।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आपका वैवाहिक जीवन तनाव युक्त हो सकता है। हीरा रत्न आपके व्ययों को सौंदर्य विषयों पर केन्द्रित कर सकता है। इसके साथ ही रत्न प्रभाव से आपके व्यय ग्रहस्थ जीवन के सुख प्राप्ति से संबंधी हो सकते हैं। विदेश गमन, शयन सुख को भी यह रत्न प्रभावित कर रहा है। हीरा रत्न आपके मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को बाधित कर सकता है। इस रत्न के प्रभाव से हो सकता है कि आपका धन-धान्य,

आय एवं उन्नति आशातीत न हों। यह भी संभावित है कि आप अपने जीवन साथी का समय पर साथ न दे पाएं। दायित्वों के निर्वाह में आपसे कहीं कुछ त्रुटि हो सकती है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ कमजोर हो सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(12/12/2006 - 12/12/2026)

शुक्र की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य

(12/12/2026 - 12/12/2032)

सूर्य की दशा में आपका मोती, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(12/12/2032 - 12/12/2042)

चन्द्र की दशा में आपका मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(12/12/2042 - 12/12/2049)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, गोमेद, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(12/12/2049 - 12/12/2067)

राहु की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(12/12/2067 - 12/12/2083)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

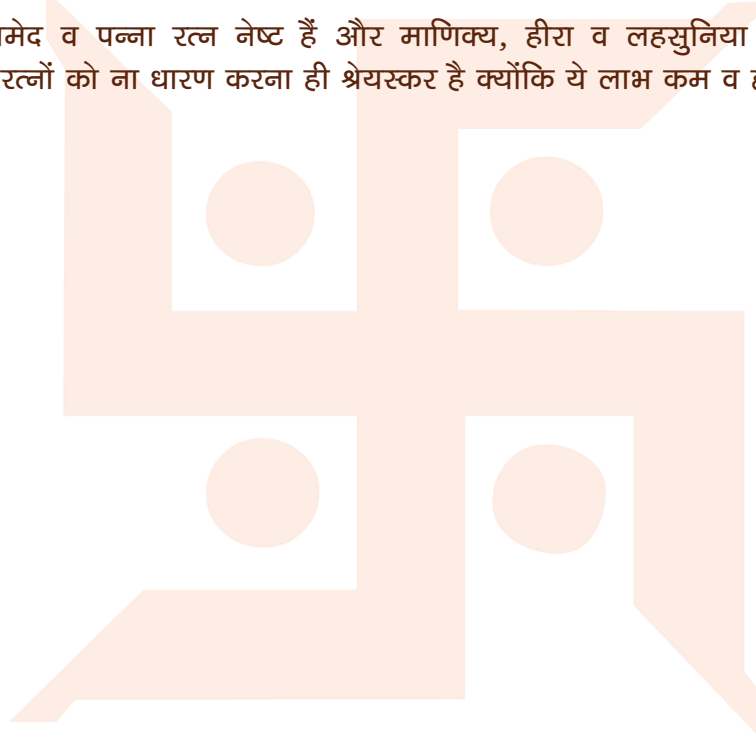
गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, लहसुनिया व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(12/12/2083 - 13/12/2102)

शनि की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

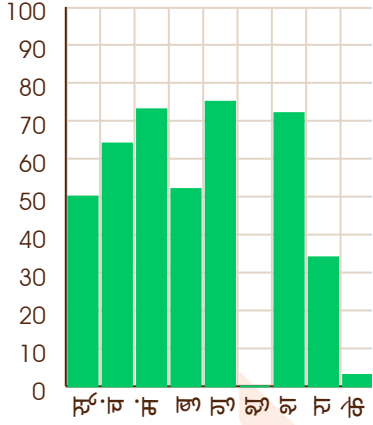
मोती व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

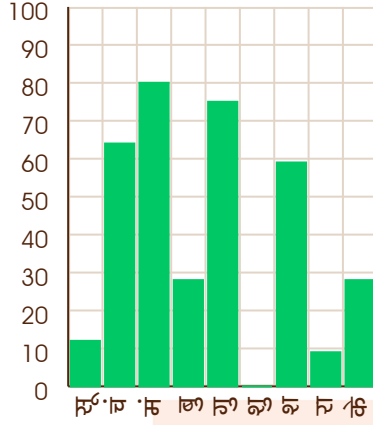


दशा ग्राफ

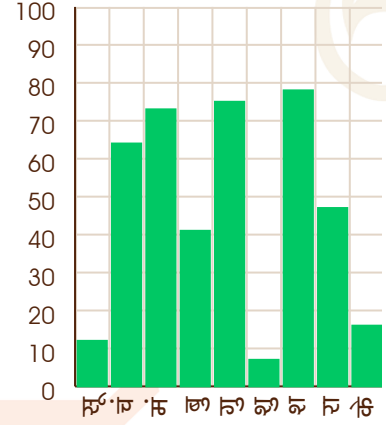
बुध - 12/12/1999



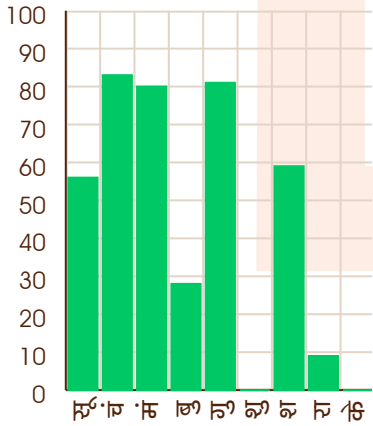
केतु - 12/12/2006



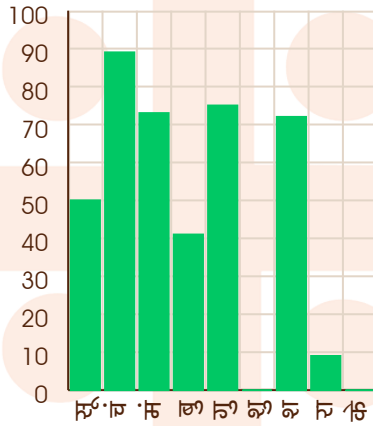
शुक्र - 12/12/2013



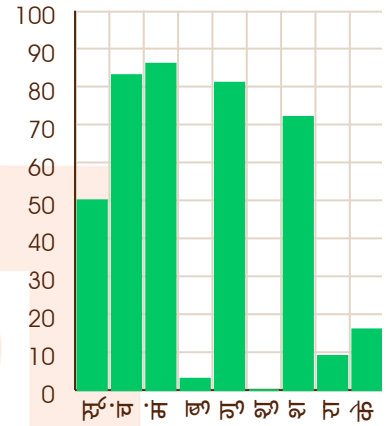
सूर्य - 12/12/2020



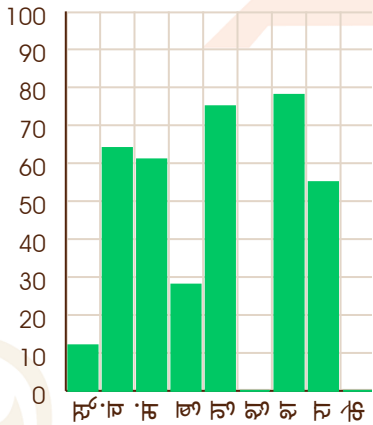
चन्द्र - 12/12/2027



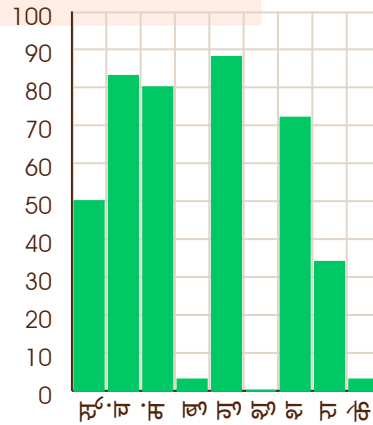
मंगल - 12/12/2034



राहु - 12/12/2041



गुरु - 12/12/2048



शनि - 12/12/2055

